हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

HIN-527

श्रेयांक -2

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

नाम:- सोफ़िया मासूर
अनुक्रमांक :- 23P0140030
PR Number:-202005265

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय
हिंदी अध्ययन शाखा

3/5/24

17/20

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU GOA

एक सफ़र ऐसा भी ।

यह बात है तब की जब हमारे विश्वविद्यालय में पहले सत्रांत परीक्षा का आखरी पेपर था। उस दिन हमारे सर ने हम सब को द्वितीय वर्ष के लेक्चर हॉल में सब को एकत्र होने के लिऐ कहा था। पहले तो हम डर रहे थे की कहीं हमें हमारे पेपर्स तो नहीं दिखाए जा रहे थे। पर जैसे ही सर ने हमें द्वितीय सत्रांत के पाठ्यक्रम को समझाने के लिए बुलवाया था। तब हमें थोड़ी सी राहत मिली और फिर धीरे - धीरे वे हमें पाठ्यक्रम समझाते गए और हम अपने ही धुन में सवार थे, फ़िर सर ने अचानक से हमें बताया कि एक पेपर तुमे ऐसा भी हैं जहां पर तुम्हें हिंदी क्षेत्रों में अध्यायन यात्रा करनी है । वहा पर रह कर चिज़ो को बड़ी नज़दीक से देखना और समझना है और उसका बादमें रिर्पोट बना कर देना है । इतना बोलते ही हम सबके के कान खड़े हो गए । आज की युवा पीढ़ी हो और बाहर घूमने से मना करें ऐसा हो नहीं सकता था बिना कुछ आगे सुने ही हम जाने के लिऐ तैयार हो गए। फिर सर ने हमें बोला की एक समस्या हैं उन्होंने कहा कि यह पेपर तब ही लिया जा सकता है जब कम से कम २० बच्चे इस पेपर को ले । अब ऐसा हुआ की मैं और मेरे अन्य ४ मित्र तो तैयार थे और साथ ही कुछ बच्चें चलने के लिए तैयार थे। तो सर ने हमें यह बता कर चले गए की जो भी है कल तक मुझे बता दो उस हिसाब से हमें आगे की प्रक्रिया करनी है और वे चले गए। और हम लगाए सब को मनाने के लिए की तुम भी हमारे साथ चलो बहुत मज़ा आएगा वगैरा -वगैरा। हमनें अपनी मेहनत से सब को मनाया और घर चले आए। और घर पर आते ही हमनें अपने - अपने मम्मी और पापा से बात की तो वो झट से मान गए। अब हम पांच सिर्फ़ सर के मैसेज का इंतज़ार कर रहें थे की कब सर मैसेज करेंगे और कब हम अपने नाम सर को देंगे लेकिन मन मैं यह भी चल रहा था की कहीं २० बच्चें आने के लिए तैयार होंगे की

नहीं। और फ़िर सर ने आखिर कार मैसेज कर ही दी और सब ने एक एक करके अपने नाम देने शुरू कर दिए। ऐसे तो जब फ़ोन वाइब्रेट होता है तो एक चीड़ - चिड़ाहट सी होती हैं लेकिन उस दिन एक अलग ही मज़ा आ रहा था। और देख ते ही देखते २६ बच्चें तैयार हो गए और हम इतने खुश हो गए की हमरी खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था। और मैं इतनी खुश थी क्योंकि यह मेरी ज़िंदगी में पहली बार था की में कहीं टूर पर जानें वाली थी वो मेरे घनिस्ट मित्रों के साथ। परिवार के साथ तो अक्सर टूर पर जाया करती थी पर पहली बार अकेली वो भी अपने मित्रों के साथ टूर पे जाने वाली थी, तो एक अलग सी खुशी महसूस हो रही थीं। और फ़िर कुछ दिन बीत गए और फिर सर का एक दिन मैसेज आता है की हम सब प्रोफ़ेसरस ने मिलके तुम सबको दिल्ली ले कर जाने के लिए तैय किया है और उसी के साथ हमें वहां पर रहने का और वहां के खान – पान के खर्चें के बारे में बताया और हम से कहा कि सब अपने घर पर एक बात कर लीजिए और बताएं। तो मैंने अपने घर पर बात की तो मेरे पापा झट से मान गए पर माँ दिल्ली सुनते ही थोड़ी हिचकिचाने लग गई क्यों की वो आए दिन दिल्ली में हुवे अप्रादो के बारे में टीवी पर देखती है और वो डरने लगी और उसका डरना भी लाज़मी था क्योंकि वह तो मां का दिल है। वह पहले अपने बच्चें के बारे में सोचेगी और यह भी तो था की मैं पहली बार अकेली घर से दुर जा रही थी। पर बादमें पापा ने माँ को समझाया और उस दिन उन्होंने माँ से एक वाक्य कहा था की "जब तक वह कहीं बाहर अकेली नहीं जाएगी तब तक दुनिया को कैसे समझेगी और दूसरे लोगों का व्यक्तिव कैसे जाने गी?" उस दिन से मेरी माँ तैयार हो गई मुझे भेजने के लिए और मेरे तो खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था। हम दिल्ली १३ फ्रवरी २०२४ को जानें वाले थे , और जैसे ही हमें यह पता लग जाता है हम बेसबरी से इस दिन का इंतज़ार कर रहे थे। और साथ ही हमारे सर के द्वारा इस टूर की प्रक्रिया शुरू हो गई। किसी भी टूर को आरंभ करने से पहले वहां तक कैसे पहुंचे और वहां जाकर कहा रहेंगे यहजानना

अत्यंत आवश्यक है। तो इसी को ध्यान में रखते हुए हमारे सर कुछ बच्चों को अपने साथ लेकर ट्रेन की टिकट बुक करने के लिए ९ जनवरी २०२४ को निकल जाते है। और वहां जाकर १३ फ्रवरी की टिकट बुक करते है। और वहां से आतें ही मुझे मेरे मित्रों से पता चलता है की सिर्फ़ कुछ ही बच्चों की टिकट कन्फर्म हुवी है और कुछ की अभी वेटिंग पे हैं अगर थोड़े दिन में कन्फर्म होती है तो ठीक है वरना एडजस्ट कर के जाना पड़ेगा। थोड़ी निराशा तो हुई पर मैं खुश थी की हम दिल्ली जाने वाले थे। और क्योंकि हम जिस समय जानें वाले थे वह ठंडी का समय था तो मैं गर्म कपड़ों की शॉपिंग करने मैमें लग गई।और सब सही चल रहा था सब अपने अपने मित्रों से वहां जाकर क्या क्या करेंगे इसकी चर्चा कर रहें थे। और हमारी एक मित्र प्रतिमा जो है उसका तो क्या केहना वो तो खुशी के फूले समाई जा रही थी वह रोज़ हमें ग्रुप पर दिल्ली के अलग – अलग खाने की चीज़े भेज रही वहां के कलाकृति के तस्वीरे हमें भेज रही थी।

९ फ्रवरी २०२४ का दिन होता है और दोपहर के १:०० बजे हमें एक बुरी ख़बर मिलती है की हमारा टूर किसी कारण वश कैंसल हो चुका है। और अब हम १३ फ्रवरी को न जाकर १८ मार्च २०२४ को जाने वाले थे। एक वक्त के लिए ऐसा लगा की मानो कि हमारे खुशियों को किसी की नज़र लग गई। और अब मेरा दिल्ली जानें का मन भी कर रहा था और नहीं जानें का भी मन कर रहा था क्योंकि रमज़ान १२ मार्च को शुरू होने वाला था और मेरे मन में यह प्रश्न बार बार आ रहा था की मैं रोज़ा रह कर कैसे इतनी गर्मी मैं घूमूंगी जैसे की सब को पता है की दिल्ली की गर्मी बहुत खतरनाक होती है वह गोवा जैसी आम गर्मी नही है वहां पर गर्मी का तापमान ४४ डिग्री से ज्यादा होता है। तो इस हालत में मेरा जाना तो कतई त्य नहीं था। और फिर जैसे ही मम्मी को पता चला की हम रमज़ान में दिल्ली जाने वाले है उउन्होंने साफ साफ मना ही करदिया। लिकिन फिर मेरे पापा ने फिर से माँ को मनाया और मेरे

घनिस्ट मित्र प्रीतेश और दिव्या ने भी मिलके माँ को मनाया और फ़िर वह मान गई ,लेकिन फिर हमनें सोचा की जो होता है अच्छे के लिए होता है और हम ने परिस्थितियों को समझा और अपने दिल्ली जाने के दिनों को उंगलियों पर गिना शुरू कर दिए। जिस दिन हमें था बात पता चली उस समय हमारे विश्वविद्यालय में सूत्रसंचालन की कार्यशाला चल रही थी । उसी दिन सर ने लगभग २ बजे फिर से उन्हीं बच्चों को लेकर ट्रेन की टिकट कैंसल करवाने चले गए। चेहरे पर उदासी लिए हुवे मेरे मित्र टिकट कैंसल करवाने सर के साथ चले गए। और इसी के साथ कुछ कारण वश हमारी प्रिय मित्र प्रतिमा इस टूर पर आने से मना करती है हम उसको बहुत मानते है पर वो टेहरी जिद्दी वह नहीं मानती है और इस वजह है हम उससे बहुत नाराज़ होते है लेकिन फिर हमारे लाख कहने पर भी वह नहीं मानती है तो एक कहावत है ना “की किसी को हम मना सकते है लेकिन उसके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते”।

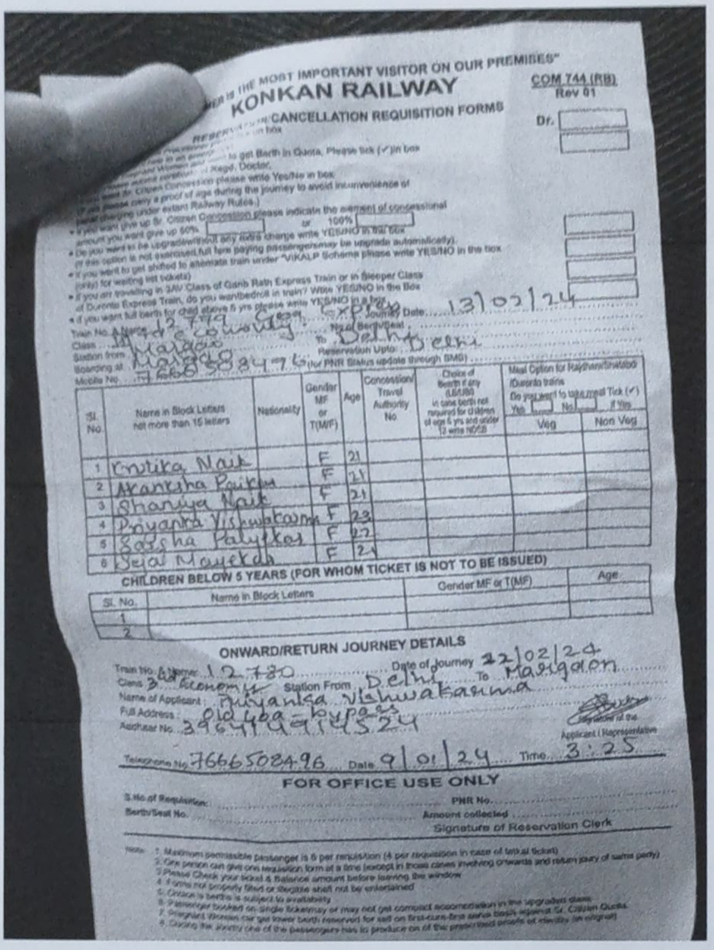

"...IS THE MOST IMPORTANT VISITOR ON OUR PREMISES"

KONKAN RAILWAY

COM 744 (RB)
Rev 01

RESERVATION/CANCELLATION REQUISITION FORMS

Dr.

Train No. & Name: 12779 Goa Express
Journey Date: 13/02/24
Class: 3rd economy
Station from: Margao
To: Delhi
Boarding at: Margao
Reservation Upto: Delhi
Mobile No. (for PNR Status update through SMS)

Sl. No.	Name in Block Letters not more than 15 letters	Nationality	Gender M/F or T(M/F)	Age	Concession/ Travel Authority No	Choice of Berth if any (LB/UB)	Meal Option: Veg	Meal Option: Non Veg
1	Krutika Naik		F	21				
2	Akanksha Paikar		F	21				
3	Shaniya Naik		F	21				
4	Priyanka Vishwakarma		F	23				
5	Sarsha Palyekar		F	22				
6	Sejal Mayekar		F	21				

CHILDREN BELOW 5 YEARS (FOR WHOM TICKET IS NOT TO BE ISSUED)

Sl. No.	Name in Block Letters	Gender M/F or T(M/F)	Age
1			
2			

ONWARD/RETURN JOURNEY DETAILS

Train No. & Name: 12780
Date of Journey: 22/02/24
Class: 3rd economy
Station From: Delhi
To: Margaon
Name of Applicant: Priyanka Vishwakarma
Full Address:
Aadhaar No.
Signature of the Applicant / Representative
Telephone No.
Date: 9/01/24
Time: 3:25

FOR OFFICE USE ONLY

S. No. of Requisition:
PNR No.
Berth/Seat No.
Amount collected
Signature of Reservation Clerk

और ऐसे ही कुछ दिन बीत गए इसी दौरान सर हमें बार -बार क्या अपने साथ लेकर जाना हैं यह बता रहें थे। और इसी के साथ अब हम ठंडी के बजाए गर्मी के मौसम में जाने वाले थे था फिर से हमने अपने दूसरे कपड़े बैग में रखकर अपनी पूरी तैयारी के साथ उस दिन का इंतज़ार कर रहें थे जब हम दिल्ली जानें वाले थे। और आखिर कार वह दिन आ ही गया जब हम दिल्ली जानें वाले थे। वह सुबह कुछ अलग सी थी मेरे लिए कुछ अलग सी खुशी और एक अलग सा डर लग रहा था। और मुझे ऐसे लग रहा था की मानो की में अपने ज़िंदगी में कुछ नया करने जा रही हु और इसी खयाल में

अपने आप को बुनते में अपने बैग को उठा के मडगांव रेलवे स्टेशन पहुंच गई। मेरे साथ मेरे मम्मी और पापा छोड़ने आए थे और फिर वो मेरे साथ कुछ समय के लिए रुक कर घर चले गए। हमारी ट्रेन ३:३० को आने वाली थी पर सब कुछ समय से हो ऐसा नहीं हो सकता था । उस दिन भी ट्रेन पूरे २ घंटे लेट थी। और हम बार बार अपने फोन मैं जो ट्रेन ऐप है उसको देख रहे थे और इधर उधर घूम रहें थे वो कहते है ना की जब आप अपने मित्रों के साथ होते हो तो कैसे वक्त बीत जाता है उसका पाता ही नहीं चलता ठीक उसी तरह हमें भी कब २ घंटे हो गाए उसका पाता ही नहीं चला। और जैसे ही हमने ट्रेन की आवाज़ सुनी तो इतनी खुशी हुई और ऐसे लग रहा था की कब हम उस ट्रेन में चढ़ कर बैठ जाए। फिर जैसे तैसे हमनें अपने होश को संभाला और अपने सामान को उठा कर ट्रेन में चढ़ गए और अपने सफ़र के तरफ़ रवाना होगए। ऐसे ही दिन ढलता चला गया और कुछ ही समय में दुधसागर आने वाला है ऐसे पता चला और फिर मानो एक छोटे बच्चें की तरह एक दूसरे से लड़ने झड़ने लग गए की इस तरफ़ सागर आएगा क्या उस तरफ़, मैं खिड़की के पास बैठूंगा और इस मैं मैं के चक्कर मैं दूधसागर कब आगया पता ही नही चला और फिर हमने दूध सागर की कुछ तस्वीरे खींची। और इसी के साथ मेरे इफ्तारी का भी समय हो चुका था , तो मैंने और मेरे मित्रों ने मिलके इफ्तारी की और बहुत मज़ा आया । ख़ूब कहाया और फ़िर प्रीतेश ने

'ऊनो' कार्ड्स लाए थे मुझे तो खेलना नहीं आता था पर उसने मुझे उस कार्ड्स को कैसे खेलते हैं यह सिखाया और फ़िर हमनें बड़े मज़े से उसको खेला। और इसी खेल के चक्कर में कब रात हो गई इसकी हमें भनक भी नहीं लगी । और फ़िर हमनें अपना भोजन किया और सोने के लिऐ अपने अपने बिस्तर पर चले गए। और मुझे नींद ही नहीं आ रही थी क्योंकि मैं १ साल से कहीं ट्रेन में सफ़र नहीं की थी। और मुझे इतनी आदत भी नहीं थी कहीं अकेली जाने की उस चक्कर मैं मुझे नींद भी नहीं आ रहीं थी । फिर मैंने देखा की मेरे दोस्त भी सोए नहीं है तो हम चारों पूरी रात सोए नहीं और इधर

– उधर घूमने लगे। हमारे साथ हमारी मित्र सुविधा थी जिसका मैंने उस दिन एक अलग ही रूप देखा वह वैसे तो एक शांत सी लड़की है जो किसी से उतना खुलके

नहीं घुल मिलती है पर उस रात उसने हमारे साथ मिलकर इतनी मस्ती की कि मैं हैरान रह गई और हम सब ने इतने मज़े किए। हम कुछ बच्चे सर के साथ मिलकर कई स्टेशन पर भी उतरे।

मस्ती करते करते इतने थक गाए थे की सुविधा, प्रियंका और प्रीतेश सोने चले गए और मैं और दिव्या अपने फ़ोन को इस्तमाल कर रहे थे और फिर रात का गेहरा अंधेरा छा गया और मैं और दिव्य उठ कर कंपार्टमेंट के बाहर चले गाए और जिसका डर था वहीं हो गया। रात के अंधेरे मैं एक चोर हमारे कंपार्टमेंट में चढ़ गया। और वह हमारी मित्र सुविधा की बैग चुरा कर प्रीतेश के सीट पर चढ़ रहा था की इतने में ही प्रीतेश की आंख खुल गई और वह उस चोर को रंगे हाथ पकड़ लिया। और वह उस चोर को डाटने के बाजह उसको समझा रहा था की "भैया ऐसे नहीं करते" , फिर इतने में ही

हमरी क्लास की एक छात्रा उठ कर उस चोर को डाटने लग जाती है और बातों ही बातों में चोर वहा से भाग जाता है। और मज़े की बात यह है की इतना सब हुआ लेकिन सुविधा एक बार भी जागी नहीं वो मस्त होश खोकर सो गई थी।

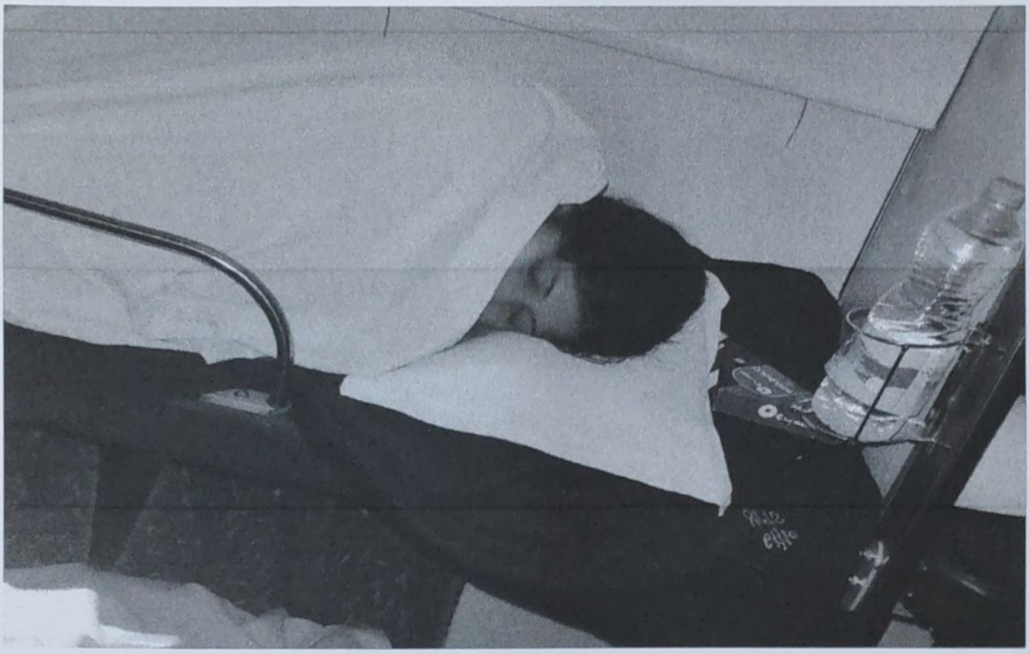

आखिर कार पूरे ढाई दिन बाद हमारी ट्रेन दिल्ली के निजामुद्दीन स्टेशन पर जा पहुंची। और हमें ऐसे लग रहा था की कब हम हॉटल जा कर स्नान करे क्योंकि दो दिन ट्रेन मैं स्नान नहीं किए थे। और इतने थके हुवे थे की थोड़े आराम की ज़रूरत थी और फिर हॉटल बुक होने तक हमें स्टेशन के नजदीकी मेट्रो स्टेशन मैं बैठना पड और होटल बुक होते होते बहुत टाइम लग जाता है और फ़िर हमें मेट्रो स्टेशन के स्टाफ हमें आकार वहा से बाहर जानें के लिऐ कहते है। और हम दो मेट्रो बदल कर जाना पड़ा और फिर हम वहां के टुकटुक से अपने हॉटल जो पहाड़गंज मैं था वहां चले गाए और वहां जा कर जैसे ही हमें अपने अपने कमरे की चाबियां दी गई हम तुरंत अपने कमरे मैं जा कर स्नान – खाना कर के सोने के लिए तैयार हो गए। इतने में ही हमरे सर हमें फ़ोन करके

बताते हैं की हम बाहर जा कर कुछ खा कर आते है तो हम अपने नाइट सूट में ही बाहर जानें का तय करते है। क्योंकी हम बस बाहर खाने जाने वाले थे और लौट कर वापस हॉटल आ कर आराम करने वाले थे। और फ़िर हम जहां ठहरें हुए उसी हॉटल के करीब एक होटेल था हम वहां गए और अपना दुपहर का भोजन किया। और उतने में ही सर हमें कहते है की हम अक्षरधाम जा कर आते है और वही पर रात का कुछ

खा कर आयेंगे। अब हमें फिरसे मेट्रो में जाना था और हमें अपने कपड़े देख कर इतनी हसी आ रही थी की पूछो ही मत।

खाने के बाद हम सब अक्षरधाम मंदिर पहुंच गए मेट्रो से , अक्षरधाम मंदिर को स्वामीनारायण अक्षरधाम भी कहा जाता है। स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर सभी लोगों के लिए खुला हुआ होता है यहां पर सभी धर्म के लोग आ जा सकते है।लेकिन यहां इलेक्ट्रॉनिक सामानों को मंदिर के अंदर ले जाना मना है। तो हमने अपने मोबाइल, और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामानों को बाहर काउंटर पर जमा कर दिए । मंदिर परिसर में क्लॉक रूम की सुविधा उपलब्ध है। इस मंदिर में कोई खाने का सामान भी नहीं ले जा सकते। हां बेबी फूड और पानी के बोतल को अपने साथ जरूर रख सकते हैं। मंदिर में फोटोग्राफी मना है। मंदिर के मुख्य हॉल में एक सुनहरी रंग की सवमीनारायण की बड़ी सी मूर्ति है। मंदिर परिसर में एक फूड कोर्ट भी है जहां हमनें सात्विक शाकाहारी नाश्ते और भोजन मिलता है पर वहा मैंने और प्रीतेश ने जामुन की आईस क्रीम खाई जो इतनी स्वादिष्ट थी और आम की लस्सी भी पी। परिसर के अंदर एक शानदार बुक और गिफ्ट शॉप है। जहां पर बहुत सारी किताबें, ऑडियो, वीडियो के साथ पूजा सामग्री और आयुर्वेदिक सामान रखा हुआ था हमने खरीदा तो नहीं कुछ भी पर देखकर उसका आनंद लिया। और यह सब देखते देखते कब ३-४ घंटे निकल गए पाता ही नहीं चला । और फिर क्योंकि हमनें कुछ ज्यादा नहीं खाया था तो हम ने सोचा की हम मेट्रो स्टेशन से मोमो ख़रीद ते हैं ताकि हम रात को अपने रूम में बैठ कर खा सके और इस चक्कर मैं हम आगे आगे चलकर मेट्रो स्टेशन पहुंच गए और हमने देखा ही नहीं की सर हमारे पीछे है ही नहीं और फ़िर जो सर ने आकर हमारी दाठ लग्यी सब के सामने इतनी शर्मिंदगी महसूस हुई की क्या ही बताएं। ऐसे लग रहा था की कब हम जल्दी से अपने रूम पर पहुंचे और जल्दी से खा कर सो जाए। और फिर हम मेट्रो ले कर अपने हॉटल पहाड़गंज पहुंच गए और फिर सर ने हमें अगले दिन हम कहा कहा जाने वाले है यह बताया। और सब अपने अपने कमरे में चले गए और हम भी अपने कमरे मैं जा कर फ्रेश हो कर मोमॉस खाए और सो गए।

कड़कती धूप के साथ हमरा अगला दिन शुरू होता है। और हम इंडिया गेट , जामिया मिल्लिया इस्लामिया , हुमायूं का मकबरा, लोटस टेंपल और बिरला मंदिर जाने वाले थे । तो दूसरे दिन से हमने बस बुक की होती है और हम बस से अपने आगे के सफ़र के लिए निकल पड़ते है। और सबसे पहले हम इंडिया गेट जा पहुंचते है। सूरज की किरणे इतनी तेज़ थी की हमारे पसीने छूट रहे थे बहुत चलने के बाद हम आखिर कार इंडिया गेट पर पहुंच जाते है। और वहां का नज़ारा बहुत सुंदर था। अगर हम इंडिया गेट के बारे मैं विस्तार से बात करे तो प्रथम विश्वयुद्ध और अफ़ग़ान युद्ध में मारे गए

भारतीय जवानों की याद में 1931 में बनकर तैयार हुआ। यह इमारत लाल पत्थर से बनी है जो एक विशाल ढांचे के मंच पर खड़ी है। इसके आर्च के ऊपर दोनों ओर 'इंडिया' लिखा है। इसकी दीवारों पर 70,000 से अधिक भारतीय सैनिकों के नाम शिल्पित किए गए हैं, जिनकी याद में इसे बनाया गया है। इंडिया गेट दिल्ली की महत्त्वपूर्ण इमारत है। इसकी दीवारों पर उन हज़ारों शहीद सैनिकों के नाम हैं। सबसे ऊपर अंग्रेज़ी में लिखा है-

To the dead of the Indian armies who fell honoured in France and Flanders Mesopotamia and Persia East Africa Gallipoli and elsewhere in the near and the far-east and in sacred memory also of those whose names are recorded and who fell in India or the north-west frontier and during the Third Afghan War.

इंडिया गेट के ठीक सामने एक विशाल मूर्ति है जो सुभाष चंद्र बोस जी की जो हमरे प्रधान मंत्री ने हाल ही मे बनवाया था।

फिर हम राष्ट्रिय समर स्मारक देखने चले गए अगर उसके बारे में बात की जाए तो यह राष्ट्रीय समर स्मारक या युद्ध स्मारक भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली के इंडिया गेट के आसपास के क्षेत्र में अपने सशस्त्र बलों को सम्मानित करने के लिए बनाया गया एक स्मारक है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 25 फरवरी 2019 को इंडिया गेट के पास 44 एकड़ में बना नेशनल वॉर मेमोरियल राष्ट्र को समर्पित किया। स्मारक की दीवार को जमीन के साथ और मौजूदा सौंदर्यशास्त्र के साथ सामंजस्य स्थापित किया है। 1947-48, 1961 (गोवा), 1962 (चीन), 1965, 1971, 1987 (सियाचिन), 1987-88 (श्रीलंका), 1999 (कारगिल), और युद्ध रक्षक जैसे अन्य युद्धों में शहीदों के नाम इस प्रकार आजादी के बाद शहीद हुए १३,३०० भारतीय सैनिकों के नाम यहां

पत्थरों पर लिखे गए हैं। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक हमारे उन सभी वीरों को श्रद्धांजलि देता है जो युद्ध में अपना बलिदान दे चुके है। वही पर एक अंदर कुछ दुकान जैसा था जिसका नाम "स्मारिका सोवेनैर आउटलेट" था जहां पर सैनिकों के कपड़ो से अलग अलग वस्तुएं बनाकर बेची जा रहीं थी और और वहा पे बाहर डिजिटल स्क्रीन पर उन सैनिकों के बारे में लिखा हुआ था जो युद्ध में शहीद हो गए है।

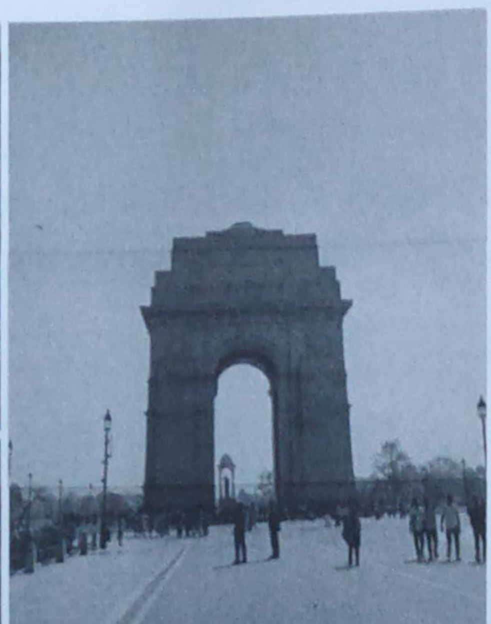

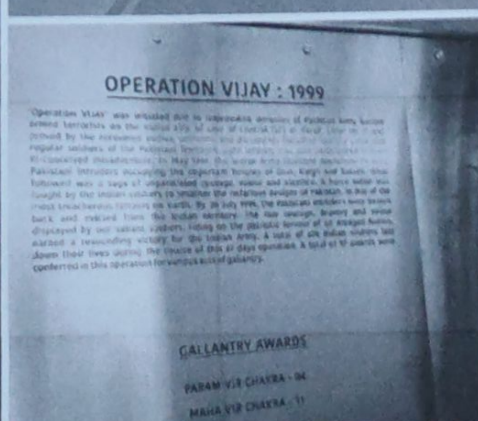

यहां से अब हम दूसरी जगह देखने के लिऐ रवाना हो गए और अब हम जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय जाने वाले थे। फिर से हम ने अपने बस मैं बैठ कर अपनी दूसरी मंजिल पर निकल पड़े पर जिस रास्ते हम जामिया मिल्लिया इस्लामिया जा रहे थे वही रास्ते में साहित्य अकादमी थी। और हमरे सर और मैम ने हम सब से कहा की यहां पहुंच ही गए तो अंदर जाकर देख लेते है। और फिर उस विशाल सी इमारत को देखकर मेरे मन मैं एक उत्सुकता जागी की ऐसा क्या होगा इस इमारत मैं और उसी उत्सुकता के साथ मैं साहित्य अकादमी के अंदर चली गई जाते ही हमें वहा की जो बच्चों के पुस्तकालय की स्टाफ थी उनसे परिचित हुई। और उन्होने हमें इस विशाल से पुस्तकालय के बारे में संक्षिप में बताया। और हम आगे बड़े उस पुस्तकालय को अच्छी तरह से देखने के लिए। हमने उनका रीडिंग रूम देखा जहा बिलकुल भी शोर करना मना है। उस रीडिंग रूम में जाते ही देखा मैंने की बूढ़े , युवा सब अवस्था के लोग एक साथ बैठ कर पढ़ रहे हैं।इस पुस्तकालय मैं कई भाग थे हमने

धवनी यंत्र के यंत्रों का एक संग्रह था जहां पर कई तरह के ध्वनि यंत्र रखे गए थे। और

उस ध्वनि यंत्र के चेयरपर्सन ने हमें वहा के अलग अलग ध्वनि यंत्रों के नाम और उनका किस चीज़ में इस्तमाल किया जाता हैं इसको विस्तार से बताया।

इस संग्रह के ठीक बगल मैं ही नाटक और नृत्य मैं जो मुकुट लगाते थे पहले ज़माने से लेकर के अब तक उन सब का संग्रह वहा पर था। वहा पर अलग अलग नाटकों में पहन कर खेले जाने वाले मुकुट और जो मुकुट नृत्य करने के लिए पहने जाते हैं ऐसे

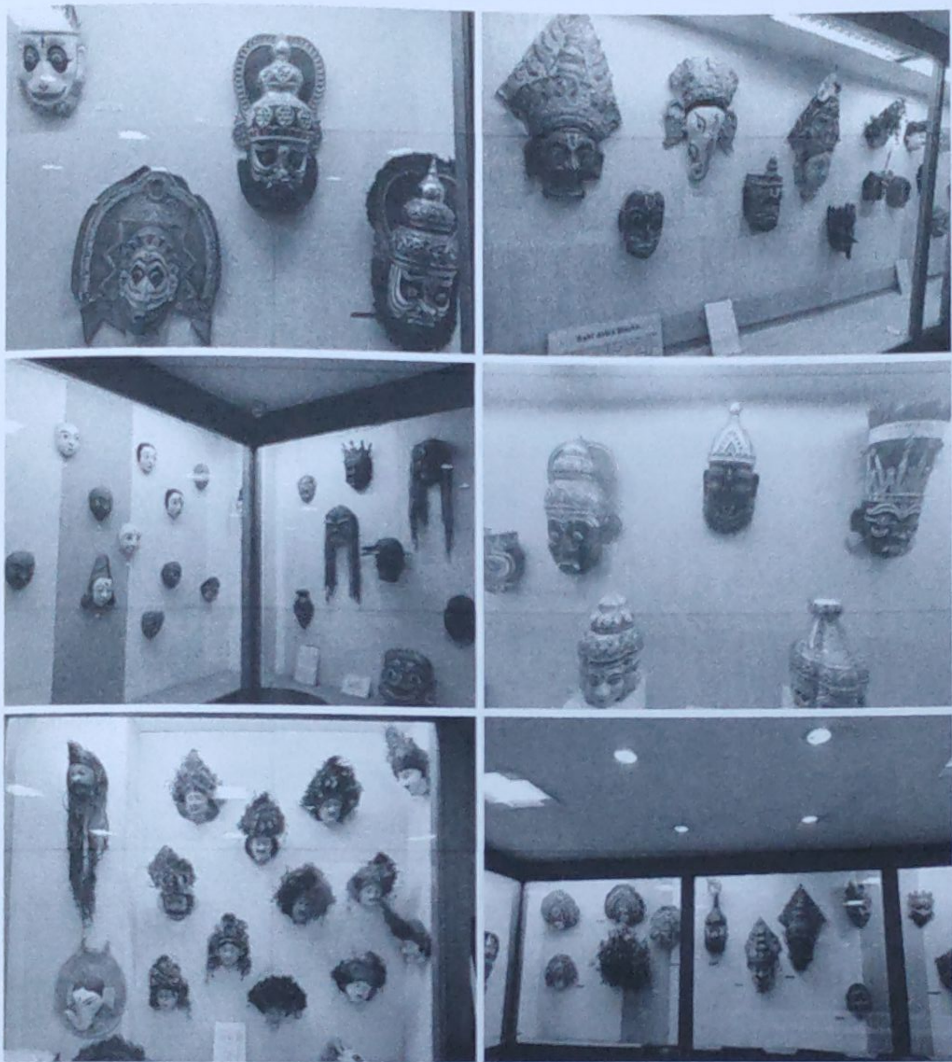

मुकुट वहा रखे गए थे जैसे रामलीला, साही जत्रा, कृणत्तम, चाहु नृत्य, लामा रिचुअल डांस मास्क ऐसे अनेक नम्मों के मुकुट रखें गए थे।

अब साहित्य अकादमी घूमने के बाद हम निकल जाते हैं जामिया मिल्लिया इस्लामिया को देखने के लिऐ और अगर हम उसकी इतिहास के बारे में बात करें तो जामिया मिलिया इस्लामिया, जो 1962 तक एक समविश्वविद्यालय के रूप में कार्य कर रहा था, ने दिसम्बर, 1988 में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त किया। विश्वविद्यालय नर्सरी स्तर से स्नातकोत्तर एवं डाक्टरेट स्तर तक शिक्षा प्रदान करता है। विश्वविद्यालय के 9 संकायों के समूह के अंतर्गत 36 विभाग हैं। इसके 6 स्कूल भी हैं। वर्तमान में विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों में पी.एच.डी. कार्यक्रमों के अतिरिक्त अवर स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर कुल 160 पाठयक्रम प्रदान कर रहा है।

उर्दू में 'जामिया' का अर्थ है विश्वविद्यालय और 'मिलिया' का अर्थ होता है राष्ट्रीय।जामिया मिलिया भारत का विशेष विश्वविद्यालय है, जिसने आज़ादी से पहले एक छोटी संस्था से शुरुआत करके आज देश की प्रमुख यूनीवर्सिटी होने का गौरव प्राप्त किया है।इस यूनीवर्सिटी की स्थापना 29 अक्टूबर 1920 को अलीगढ़ उत्तर प्रदेश में हुई। 22 नवंबर 1920 को 'हकीम अजमल ख़ान जामिया' के पहले चांसलर बने। 1925 में जामिया को अलीगढ़ से दिल्ली शिफ्ट किया गया। वैसे तो हमें वहां के परिसर से परिचित होने का मौका तो नही मिला क्योंकि हम जिस समय दिल्ली गए थे तब वहां पर स्टूडेंट काउंसिल के इलेक्शन चल रहे थे और उस चक्कर में जामिया मिल्लिया इस्लामिया में कुछ छात्रों द्वारा दंगे किए गए थे तो उनको लगा की हम भी वहा दंगा कराने आए है। तो उन्होंने हमें अंदर लेने से मना कर दिया। फिर क्या था निराशा भरे हम वहां से लोटस टेंपल की ओर निकल पड़े । रास्ता लंबा था और बस मैं बैठ कर उस लंबे रास्ते का हम आनंद ले रहें थे हमने स्ट्रीट शॉपिंग देखी और साथ ही साथ उन छोटे छोटे बच्चों को देखा की अपना पेट पालने के लिए रास्ते पर फूलों के

गुलदस्ते बेच रहे थे। और उस एक गुलाब के गुलदस्ते को बेचने के लिए वे हर एक गड्डियों के पीछे भाग रहें थे बिना अपनी जान की परवाह किए ये गरीबी भी बच्चों से क्या क्या करवाती है इस गहरे विचार में डूब गई की पता ही नही चला की कब हम लोटस टेंपल पहुंच गए, दोपहर के भोजन का समय हो चुका था तो हमनें अपना खान पान उस टेंपल के बाहर किया और फीर अंदर चले गए , अन्दर हमें किसी भी खाने की चीज़ों को ले जाना सक्तमना है। अगर इस लोटस टेंपल के इतिहास की बात की जाए तो यह लोटस टेंपल, भारत में दिल्ली में स्थित है, एक बहाई हाउस ऑफ उपासना है जो दिसंबर 1986 में समर्पित की गई थी, जिसकी लागत 10 मिलियन थी। अपनी फूलों जैसी आकृति के लिए उल्लेखनीय, यह शहर में एक प्रमुख आकर्षण बन गया है। धर्म के सभी बहाई घरों की तरह, लोटस टेम्पल सभी के लिए खुला है, धर्म या किसी अन्य योग्यता की परवाह किए बिना। यह इमारत 27 मुक्त-खड़े संगमरमर से बनी "पंखुड़ियों" से बनी है, जिसमें नौ भागों को बनाने के लिए तीन गुच्छों में व्यवस्था की गई है, जिसमें केंद्रीय द्वार पर 40 मीटर से अधिक ऊँचाई और 2,500 लोगों की क्षमता वाले नौ दरवाजे हैं। टेंपल के परिसर में 27 स्वतंत्र संगमरमर की "पंखुड़ियाँ" शामिल हैं ,जिन्हें तीन के समूह में जोड़कर नौ भुजाएँ बनाई जाती हैं (जिनके माध्यम से एक केंद्रीय स्थान में नौ प्रवेश द्वार खुलते हैं) इसका निर्माण बहा उल्लाह ने करवाया था, जो कि बहाई धर्म के संस्थापक थे। इसलिए इस मंदिर को बहाई मंदिर भी कहा जाता है। बावजूद इसके यह मंदिर किसी एक धर्म के दायरे में सिमटकर नहीं रह गया। यहां सभी धर्म के लोग आते हैं और शांति और सूकून का लाभ प्राप्त करते हैं।

अब हमारी सवारी हुमायूं के मकबरे के तरफ़ निकल पड़ी और कुछ ही समय में हम हुमायूं के मकबरे में पहुंच गए।

भारत में मुगल वास्तुकला का एक खूबसूरत उदाहरण, दिल्ली में हुमायूं का मकबरा है, इसे 16वीं शताब्दी में बनाया गया था। हुमायूं का मकबरा, जिसे "मुगल का छात्रावास" भी कहा जाता है।हुमायूं के मकबरे का बाहरी नजारा बेहद खूबसूरत है, क्योंकि यह भारत में निर्मित पहला बागों वाला मकबरा है। हुमायूं का मकबरा असल में पत्नी हमीदा बानो बेगम ने अपने पति, मुगल सम्राट हुमायूं के लिए बनवाया था। यह उनके द्वारा अपने पति की मृत्यु के बाद उनकी स्मृति में बनवाया गया था। सम्राट हुमायूं की मृत्यु के बाद, उन्होंने फ़ारसी वास्तुकारों को बुलाया और उनसे कहा कि वे कुछ इतना शानदार बनाएँ कि दुनिया इसे आने वाले युगों तक याद रखे। हुमायूं के बेटे अकबर ने यह जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली और अपनी पत्नी और बेटे द्वारा हुमायूं के स्मरण के प्रतीक के रूप में मकबरे का निर्माण करवाया गया। ऐसे कहा जाता है कि हुमायूँ का मकबरा हमीदा बेगम द्वारा बनाया गया था, उनके पति की मृत्यु के बाद उनकी स्मृति है, मुगल सम्राट शाहजहाँ को अपनी पत्नी मुमताज महल के निधन के बाद कुछ भव्य और स्मारक बनाने की प्रेरणा मिली। ताजमहल लगभग एक सदी बाद बनाया गया था और हुमायूँ के मकबरे से डिजाइन और वास्तुकला में बिल्कुल समान है।

और देखते ही देखते सूरज ढल गया और हम भी इतने थक चुके थी की अब बस होटल जाने का बेसबरी से इंतज़ार कर रहें थे। की इतने में ही हमरे सर हमसे कहते है की आज के शाम का एक आखरी जगह है। और वो था बिरला मंदिर हम इतना थक चुके थे की हमे लग रहा था की हम सर से कह दे की हम यहां कल चलते है। पर जैसे ही हम बिरला मंदिर पहुंचे और मैंने उस मंदिर में पैर रखा मैं मुस्लिम होते हुए भी एक अलग सी सुकून मेहसूस हुई और मानो की जो भी दिन भर की थकान थी वह झट से गायब हो गई और फिर मेरे दोस्तों ने मिलकर मुझे उस मंदिर की कलकृतियो के बारे में समझाया और प्रीतेश तो मुझे खींच खींच कर उस पूरे मंदिर में अलग अलग चीज़ों के बारे मे बताते हुवे घुमा रहा था और फ़िर अंत मैं मुझे प्रीतेश और दिव्या ने मिलके उस मंदिर से परसाद और फूल लाकर दिया।

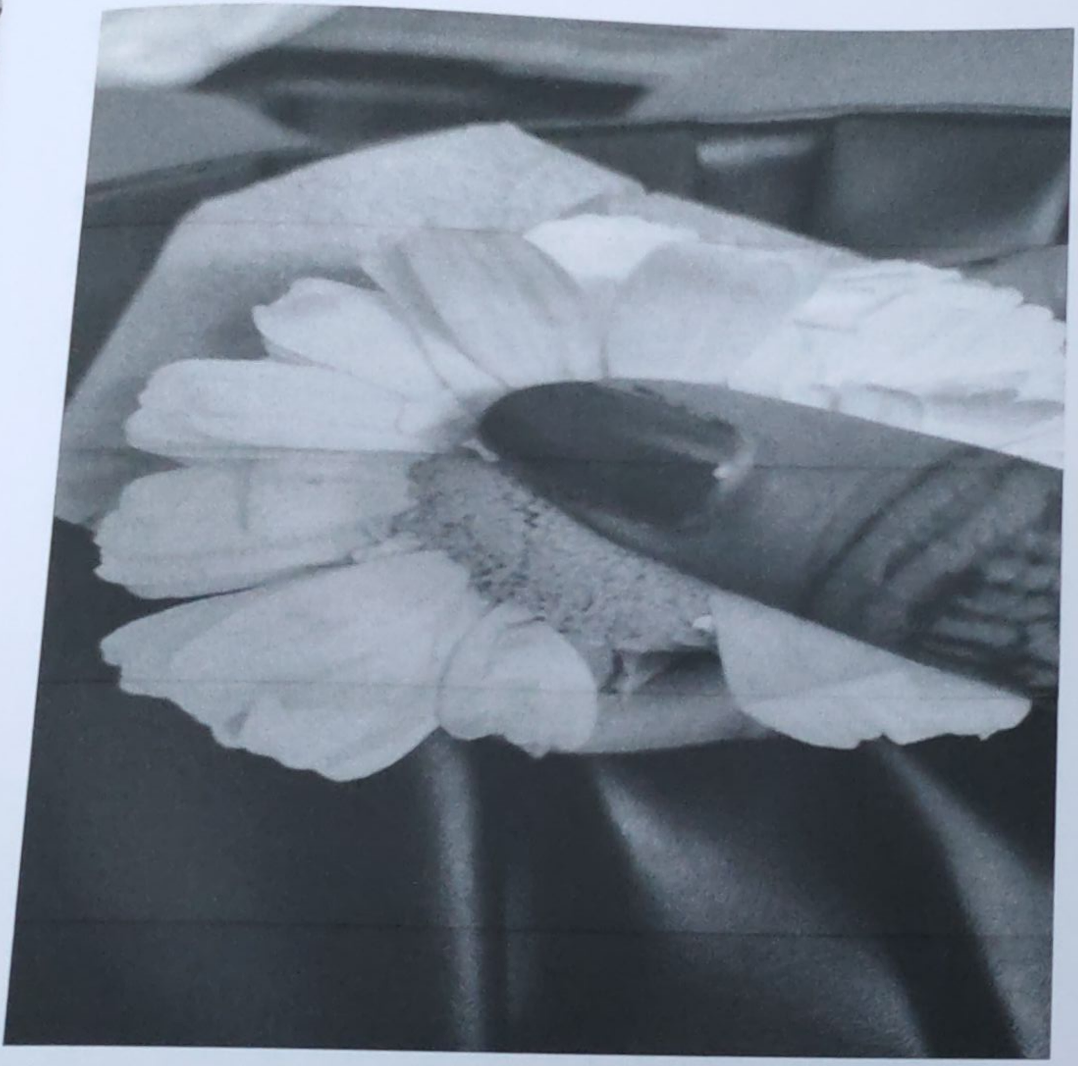

उस दिन की हसीन यादों अपने साथ लिए हम अपने होटल के तरफ़ रवाना हो गए और होटल पहुंचते ही हमनें रास्ते से कुछ खाने के लिए ले लिऐ और रूम में जाकर खाकर सो गए। यहीं पर हमारा दूसरा दिन समाप्त हो गया।

तीसरे दिन मेरी शुरवात दिव्या के और सुविधा के आवाज़ से होती वे दोनो मिल्के मुझे सुबह उठा रहे थे और मैं ५ मिंट ५मिंट करके उठ ही नहीं रही थी। बड़े कष्ट के बाद में उठ गई और आज हम दिल्ली विश्वविध्यालय, हिंदू कॉलेज, जवाहरलाल नेहरु विश्वविध्यालय और कुतुब मीनार जाने वाले थे तो हम जल्दी से तैयार हो कर अपनी यात्रा का आरंभ करते है। हम सब से पहले दिल्ली विश्वविध्यालय पहुंच जाते है और वहां जा कर पता चलता है की उस विश्वविध्यालय में होली की छूटी चल रहीं है था उस कॉलेज मैं न तो कोई प्रोफ़ेसर थे न ही कोई बच्चें छूटी होने के बावजूद भी हमें अंदर लिया जाता है और हम अंदर जा कर उनकी कक्षाएं देखते हैं वहा का परिसर देखते है । और उनके पुस्तकालय के बहार हमनें कुछ तस्वीरें भी खींची।

इसके बाद हम चल कर हिंदू कॉलेज की तरफ निकल गए क्योंकी वह दिल्ली विश्वविध्यालय के थोड़े पास ही था और हम चलते चलते ही वहां पर चले गए यह कॉलेज बहुत सुंदर थी वहां पर तरह तरह के और रंग बिरंगे फूल थे। अगर इस कॉलेज के इतिहास के बारे में बात की जाए तो हिंदू कॉलेज की स्थापना १८९९ में कृष्ण दासजी गुरवाले ने ब्रिटिश राज के खिलाफ राष्ट्रवादी संघर्ष की पृष्ठभूमि में की थी। राय बहादुर अंबा प्रसाद, गुरवाले जी सहित कुछ प्रमुख नागरिकों ने एक कॉलेज शुरू करने का फैसला किया, जो गैर-अभिजात्य और गैर-सांप्रदायिक होते हुए भी युवाओं को राष्ट्रवादी शिक्षा प्रदान करेगा। मूल रूप से, कॉलेज चांदनी चौक के किन्नरी बाजार में एक साधारण इमारत में स्थित था, और यह पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्ध था क्योंकि उस समय दिल्ली में कोई विश्वविद्यालय नहीं था। जैसे-जैसे कॉलेज का विकास हुआ, इसे 1902 में एक बड़े संकट का सामना करना पड़ा। पंजाब विश्वविद्यालय ने कॉलेज को चेतावनी दी कि अगर कॉलेज को अपना उचित भवन नहीं मिला तो विश्वविद्यालय कॉलेज को असंबद्ध कर देगा। इस संकट से कॉलेज को बचाने के लिए राय बहादुर लाला सुल्तान सिंह आए। उन्होंने अपनी ऐतिहासिक संपत्ति का एक हिस्सा, जो मूल रूप से कर्नल जेम्स स्किनर का था, कश्मीरी गेट, दिल्ली में कॉलेज को दान कर दिया। कॉलेज वहाँ से १९५३ तक चलता रहा। जब 1922 में दिल्ली विश्वविद्यालय का जन्म हुआ, तो रामजस कॉलेज और सेंट स्टीफंस कॉलेज के साथ हिंदू कॉलेज को बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया गया, जिससे वे विश्वविद्यालय से संबद्ध होने वाले पहले तीन संस्थान बन गए।

हिंदू कॉलेज भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विशेष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बौद्धिक और राजनीतिक बहस का केंद्र था। यह दिल्ली का एकमात्र कॉलेज है जिसमें 1935 से छात्र संसद है, जिसने महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू,

जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, मुहम्मद अली जिन्ना और सुभाष चंद्र बोस सहित कई राष्ट्रीय नेताओं को प्रेरित करने के लिए एक मंच प्रदान किया। युवा। 1942 में गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन के जवाब में, कॉलेज ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस कॉलेज के कुछ शिक्षकों और छात्रों ने गिरफ्तारी दी। कॉलेज ने भी कई महीनों के लिए अपने गेट बंद कर रखे थे। यह भारत में कला और विज्ञान के लिए सबसे पुराने कॉलेज में से एक है। यह विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य में स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करता है। 2020 में, इसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय (भारत सरकार) के तहत राष्ट्रीय संस्थान रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान दिया गया है। इसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा जैव प्रौद्योगिकी विभाग के लिए 'स्टार कॉलेज' का दर्जा दिया गया है। कॉलेज ने कानून, अर्थशास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान, व्यवसाय, दर्शनशास्त्र, साहित्य, मीडिया, सिनेमा, सैन्य, खेल और राजनीति के क्षेत्र में कई उल्लेखनीय पूर्व छात्रों का निर्माण किया है। हिंदू कॉलेज में इसके नाम के बावजूद सभी धर्मों के छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। उस कॉलेज के प्राध्यापक ने हमे उस कॉलेज के बारे में हमें जानकारी दी और हमें उनके बच्चों द्वारा निकाले गए कुछ पत्रिकाएं भी दिखाई साथ ही साथ उन्होंने हमें उनके कॉलेज के पहले के विद्यार्थियों के तस्वीरे भी दिखाई जो आज टीवी के जाने माने हस्तियां बन चुके है।

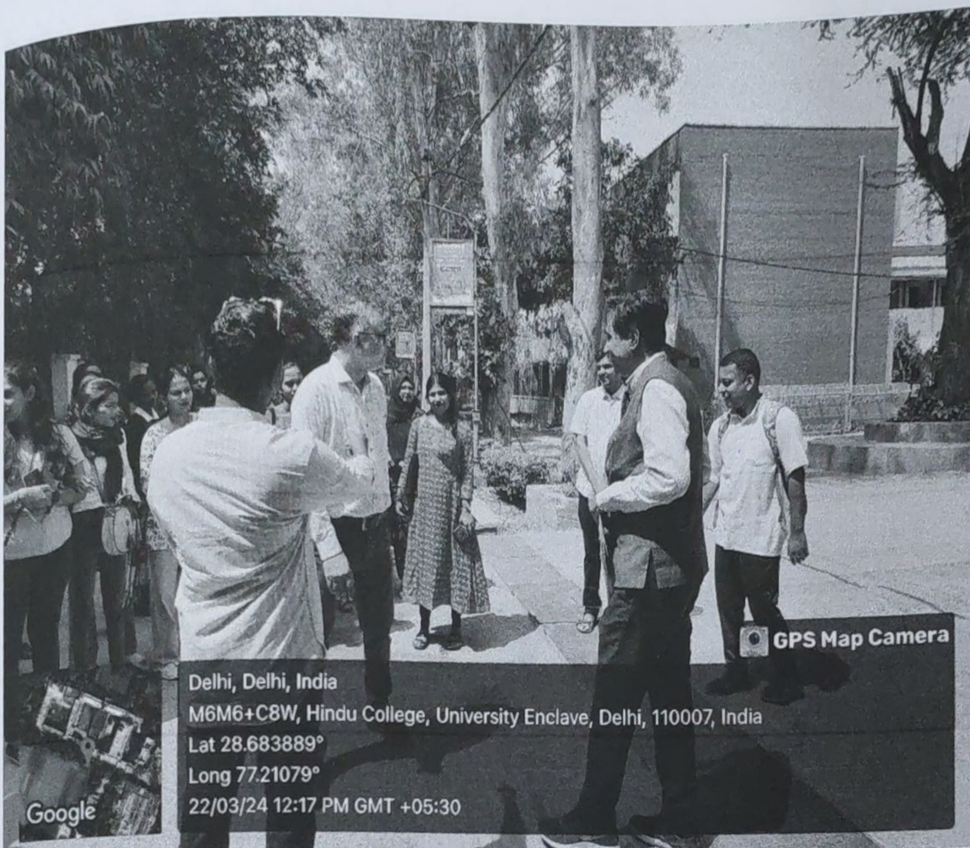

और फिर हम यहां से अलविदा ले कर जवाहर लाल नेहरु विश्वविध्यालय के तरफ़ रवाना हो जाते है जैसे ही हम वहां पहुंचते है तो देखते है की वहां पर फ़ूल सिक्योरिटी टाइट है क्योंकी इस विश्वविध्यालय में आज वोट काउंटिंग डे था और इस साम्य वहा पर बहुत सारे दंगे होते है। और यह सुन कर हम डर लगने लगा फिर हमें पीछे के रास्ते से कैम्पस के अंदर ले जाया गया और मुख्य गेट से अंदर कैम्पस में टूक टूक में जाना पड़ता है और उस समय एक टूक टूक मैं, दिव्या, प्रीतेश और सैश्री चले गए। और पहुंचते ही हमें पता चला की हम पुस्तकालय के दूसरे साइड उतार गए है और हमे पुस्तकालय के मुख्य द्वार पर जाना था अब हमारे अन्य मित्र एक तरफ और हम चार एक तरफ़ हो गए थे और हमें इतना डर लग रहा था। हम जब उस मुख्य द्वार से सामने

की ओर चलते है तो हमरे सामने कोई दो लड़के एक दूसरे को इतने बेरहमी से मर रहे है दोनो के सिर से खून निकल रहा है पर फिर भी वे एक दूसरे को मारे जा रहे है। यह दृश्य देखकर हम इतना डर गए की ऐसे लग रहा था की हमारे पैरों तले ज़मीन खिसक गई। हम जल्दी से दौड़ कर अपने अन्य मित्र के पास चले गए और हमें ऐसे लग रहा था की हम जल्द से जल्द वहां से निकल जाए। फिर कुछ साहस करके हम सर के साथ एक लड़की वहां पर ज़ोर ज़ोर से बारे लगा कर अपने विरोधियों को ललकार रही थी वह देखने चले जाएं। और फिर हम उस विश्वविध्यालय के कैंटीन में जा कर अपना दोपहर का भोजन किया और उनकी पुस्तकालय देखने के लिऐ निकल पड़े पूरे १५ फ्लोर की उनकी एक विशाल पुस्तकालय थी वहा हम हिंदी के पुस्तक देखने के लिऐ चले जाएं और वहा हमारी मुलाकात उसी विश्वविद्यालय के हिंदी के ही दो छात्रों से हुई उन्होंने हमें अपने पूरे पाठ्यक्रम के बारे में हमें बताया साथ ही साथ उन्होंने हमें उस विश्वविध्यालय से भी परिचित करवाया। और फिर हमने उस पुस्तकालय में कुछ तस्वीर खींची।

और फिर हम वहा से निकल गए और उन दो छात्रों ने मिलकर हमें अपने हॉस्टल के बारे में बताया और उन हॉस्टल के नाम भी बताए वहा के एक हॉस्टल का नाम मंडोवी है वो एक गोवा की नदी है ऐसे ही कई नदियों के नाम से वहा पर हॉस्टल है। और ऐसे ही बात करते करते वे हमारे साथ कुतुब मीनार चले आए और फिर कुतुब मीनार का इतिहास कुछ इस प्रकार है की कुतुब मीनार एक विशाल मील का पत्थर है जो आगंतुकों को मोहित करने में कभी विफल नहीं होता है। और क्यों नहीं! आख़िरकार, यह हर दिन नहीं होता है कि आप एक वास्तुशिल्प उत्कृष्ट कृति के सामने आते हैं जो दुनिया का सबसे ऊंचा ईंट टॉवर होने का दावा करता है और 800 से अधिक वर्षों से ऐसा ही बना हुआ है। दिल्ली की कुतुब मीनार एक पाँच मंजिला इमारत है जिसका

निर्माण कई शासकों द्वारा चार शताब्दियों में किया गया था। इसे मूल रूप से कुतुब-उद-दीन ऐबक ने, जो दिल्ली सल्तनत का संस्थापक था, 1192 के आसपास एक विजय मीनार के रूप में बनवाया था। मीनार का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है; हालाँकि वह इसे पहली कहानी से आगे बढ़ाने में सक्षम नहीं था। उनके उत्तराधिकारी शम्स-उद-दीन इल्तुतमिश ने 1220 में संरचना में तीन और मंजिलें जोड़ीं। इसकी सबसे ऊपरी मंजिल को 1369 में बिजली गिरने से क्षति पहुंची थी। इसका पुनर्निर्माण फ़िरोज़ शाह तुगलक ने किया था, जिन्होंने टॉवर में पाँचवीं और अंतिम मंजिल जोड़ी थी, जबकि कुतुब मीनार का प्रवेश द्वार शेर शाह सूरी द्वारा बनाया गया था।

लगभग 300 साल बाद, 1803 में, एक भूकंप में टावर को फिर से गंभीर क्षति हुई। ब्रिटिश भारतीय सेना के एक सदस्य, मेजर रॉबर्ट स्मिथ ने 1828 में संरचना की मरम्मत की। वह आगे बढ़े और पांचवीं मंजिल के ऊपर बैठने के लिए एक स्तंभयुक्त गुंबद स्थापित किया, इस प्रकार टावर को छठी मंजिल मिल गई। लेकिन इस अतिरिक्त कहानी को 1848 में भारत के तत्कालीन गवर्नर-जनरल हेनरी हार्डिंग के आदेश के तहत हटा दिया गया और मीनार के बगल में पुनः स्थापित किया गया। 1981 में एक दुर्घटना के बाद से टावर में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया है, जिसमें इसके अंदर मौजूद 47 लोगों की मौत हो गई थी। और इसी जानकारी के साथ हमरे तीसरे दिन की यात्रा भी समाप्त हो जाती है।

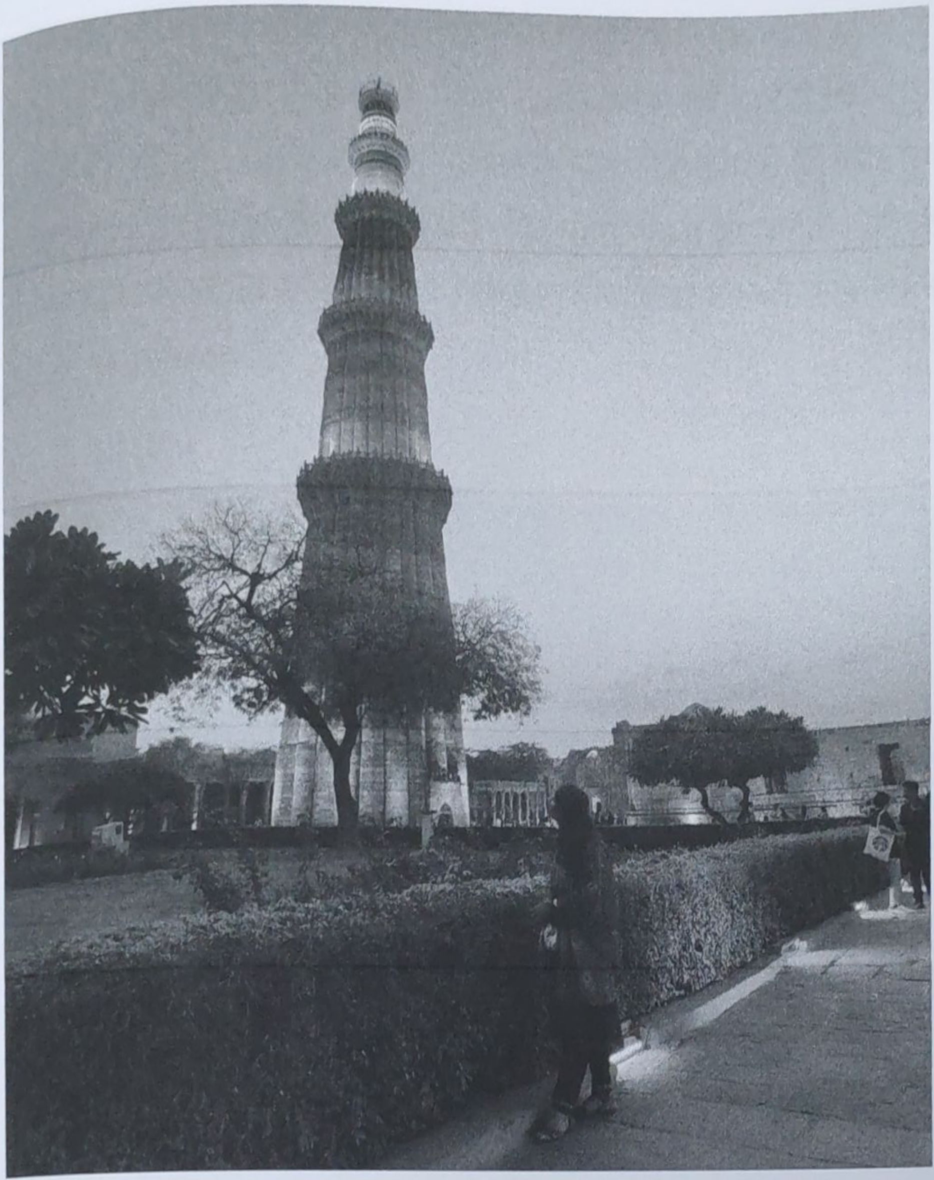

हमारे ४ दिन की यात्रा की शुरुवात सुबह के ४:३० बजे से होती है। और आज हम आगर, मथुरा और वृंदावन जानें वाले थे। और खुशी से झूम रही थी की में पहली बार मथुरा और वृंदावन जाऊंगी और वो भी होली के शुभ अवसर पर। और मैं इसे ज्यादा यह सोच कर खुश हो रही थी की मैं पहली बार होली खेलूँगी वहां जा कर तो मेरे तो

खुशी का ठिकाना ही नहीं था। तो इसी खुसी के साथ मैं जल्दी जल्दी से स्नान करके तैयार हो गई क्योंकी हम सुबह ६:०० निकलने वाले थे। करीब ३-४ घंटे का रास्ता था। तो हम अपने सवारी में बैठ कर हमरी मंजिल के तरफ़ निकल पड़ते है। और सुबह इतनी ज्यादा ठंड होने के कारण मैं, और मेरे मित्र गहरी नींद मे सो जाते है। और हमारी सवारी सीधा जाकर एक ढाबे पे रुकती है जिसका नाम शिवा था। और फिर हमें नाश्ते के लिऐ जगाया जाता है।

नाश्ता वगैरा करने के बाद हम वहां से अपनी आगे के रास्ते को तय करते है। और फिर कुछ ही घंटों में हम आगर पहुंच जाते है।

सब का सपना होता है की ज़िंदगी में एक बार उस प्यार की निशानी को देखे अपने आखों से , मैं ताज महल की बात कर रही हु। आगर जाओ और ताज महल ना देखो ऐसा नहीं हो सकता तो हमारी सवारी पहुंच जाती है ताज महल को देखने के लिए। थोड़ा फ्रेश होकर हम ताज महल के बाहरी द्वारा पर पहुंच गए। अब यहां यह समस्या थी की हमें एक गाइड को अपने साथ अंदर ले जाना था , ताकि वह हमें विस्तार के इस जगह और ताज महल से परिचित करवाए। और वो उस गाइडिंग का मोल कुछ ज्यादा बता रहे थे, जैसे तैसे करके हमारे सर और मैम ने उस गाइड को मनाया की वो कुछ भाव कम करे और वह मान गया। ताज महल का बाहरी द्वारा ताज महल के मुख्य द्वार से इतना दूर है की हमें उस तक पहुंचने के लिए एक इलेक्ट्रिक गाड़ी की जरूरत पड़ी। और फिर हम अपने गाइड के साथ उस गाड़ी में बैठ कर उस ताज महल के मुख्य द्वार के तरफ़ रवाना हुए और जैसे ही हम मुख्य द्वार पर पहुंचे वहां से हमारे गाइड का काम शुरू हो गया उसने पहले हमे अपने आप से परिचित करवाया और बाद में उसने हमें ताज महल के इतिहास के बारे में बताना शुरू किया। और उस ताज महल का इतिहास कुछ इस प्रकार है की ताज महल कई ढांचों का एकीकृत परिसर है जिसमें सफेद संगमरमर से बना मकबरा है, जहां मुगल बादशाह शाहजहां और उनकी तीसरी बेगम मुमताज महल की मज़ार (जो की अपने चौदहवें बच्चे के प्रसव के दौरान मर गयी थी।) है। मुगल साम्राज्य ने भारतीय उपमहाद्वीप में कई मकबरे बनवाए लेकिन ताज महल उनमें सबसे ज्यादा बेहतरीन है। यह मकबरा एक उंचे आधार पर पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बना है जिसमें चार मीनारें हैं, जो कि हर कोने पर स्थित हैं। मकबरे के दोनों ओर एक मस्जिद और एक गेस्ट हाउस है। ताज महल के सामने एक 'चारबाग' शैली का बाग है जिसमें बीच में एक पैदल रास्ता और फव्वारे हैं, इसके साथ ही देखने के लिए प्लेटफॉर्म और दोनों ओर हरी खुली जगह और पेड़ हैं। इस परिसर में आने के लिए एक विशाल सजावटी दरवाजा है जिसमें कुरान के अभिलेख

हैं, और हस्तलिपी लाइन है 'हे आत्मा, तू ईश्वर के पास विश्राम कर। ईश्वर के पास शांति के साथ रह और उसकी परम शांति तुझ पर बरसे।'

ताज महल को मुगल वास्तुकला की सौंदर्य उपलब्धि का शिखर माना जाता है। मुगलों ने पहले भी भारत में कई भव्य स्मारक बनवाए जिसमें दिल्ली और आगरा में कई शानदार किले हैं, फतेहपुर सीकरी शहर, विशाल जामा मस्जिद और सिकंदरा में अकबर का मकबरा। ताज महल मुगल वास्तुकला की समृद्ध विरासत से प्रेरित था और उनके पूर्वजों के मकबरे, जैसे समरकंद में गुर-ए-अमीर नाम से तैमूर लंग का मकबरा, दिल्ली में हुमायूं का विशाल मकबरा और आगरा में मिर्ज़ा गियास ब़ेग का मकबरा, जिसे संगमरमर के बारीक नक्काशीदार काम के कारण बेबी ताज भी कहा जाता है आदि थे। हालांकि ताज महल बनवाने के दौरान शाहजहां ने मुगल शैली में वास्तुकला की अभिव्यक्ति और विकसित की और उसे बहुत उपर ले गए।

ताज महल की डिजाइन में जो एक बड़ा बदलाव शाहजहां लाए थे वह था सफेद संगमरमर का बहुत ज्यादा इस्तेमाल। इससे पहले बने मकबरे, जैसे हुमायूं का मकबरा ज्यादातर लाल पत्थरों के ही बनते थे। संगमरमर के इस्तेमाल और कीमती और अर्द्ध कीमती पत्थरों से किया हुआ नक्काशी का काम एक नया विचार था और उस से ही यह सिर्फ मकबरा ना होकर कला की मिसाल हो गया।

फिर सर ने उस गाइड से एक प्रश्न पूछा की क्या यह सच है ही शाहजहां ने उन कारीगरों के हाथ कटे थे ताकि वह ऐसे ताज महल जैसी हसीन चीज़ कभी ना बनाएं तो उस गाइड ने बताया की यह सब अफवाह है ऐसा कुछ हुआ ही नहीं था। तो सर ने उस गाइड से पूछा की अगर ऐसा कुछ नही हुआ है तो इन कारीगरों की आगे पीढ़ी कहा है? तो उस गाइड ने बताया की वह ताज महल के आस पास ही रहते है आज भी और अपने पूर्वजों से दी गई देन को आज भी बरकरार रखे है वह इस संगमरमर के पत्थरो

से पुतले बना कर आज भी बेजते है। अब हमें ताज महल के अंदर जाकर देखने के लिए २०० रूपए की टिकट ख़रीदनी पड़ती है। तो हम उस टिकट को खरीद कर ऊपर प्लेटफॉर्म पर जाते है लेकीन वहा पर तुम्हें मकबरे के अंदर प्रवेश करने से पहले एक प्लास्टिक की बैग दी जाती है जिससे आपको अपने पैरों में पेहना होता है। और तब ही आप उस मकबरे के अंदर प्रवेश कर सकते है । और फ़िर जैसे ही हम उस मकबरे के अंदर पहुंच गए हमें उस गाइड ने सभी चीजों के बारे में बता रहा था उसने हमें यह भी बताया की जो मुमताज़ और शाहजहां की असली कबरे है वह नीचे बेसमेंट में है ऊपर सिर्फ एक नक़ली कब्र बनाई गई हैं। और साल में एक बार ही उनकी असली कब्रों को देखने का मौका लोगो को दिया जाता है । उनकी असली कब्रों तक पहुँने के लिए सीढ़िया बनाई गई है। और फिर जैसे ही हम इसको देख कर बाहर की तरफ निकलते है तो जो गाइड है वह हमें बताते है की जो शाहजहां के पुत्र होते है वह उनको कैदे करते है और जो शाहजहां की ख्वाइश होती है की ताजमहल के ठीक सामने एक काला ताज महल बनाया जाए जहां उनका मक़बरा हो वह अधूरा ही रह जाता है । और वह कैद में रह कर अपनी बेगम मुमताज़ को याद करते करते मर जाते है। और उनके निधन के बाद उनकी पुत्रियों के द्वारा उनके शव को लाकर ऊनकी प्रिय बेगम मुमताज़ के ठीक बगल में ही दफनाया गया हैं। और इसी को सुनते सुनते हम ताज महल के मुख्य द्वार के पास फिर से लौट गए। हमनें ताज माह में कहीं सारी तस्वीरें खींची और वहा से बाहर की तरफ लौट गए ।

आगरा आओ और अपने साथ कुछ भी न लेकर जाओ ऐसा हो नहीं सकता था तो हमनें आगरा की मशहूर मिठाई ली जिसको पेठा कहा जाता था और हमनें उसको लेने से पूर्व इतनी तरह तरह के पेठे चखे की क्या ही बताएं। फिर वहीं पर हमने अपना दोपहर का भोजन किया और इन सभी हसीन पलों को अपने साथ संजोए हम मथुरा की ओर निकल पड़े ।

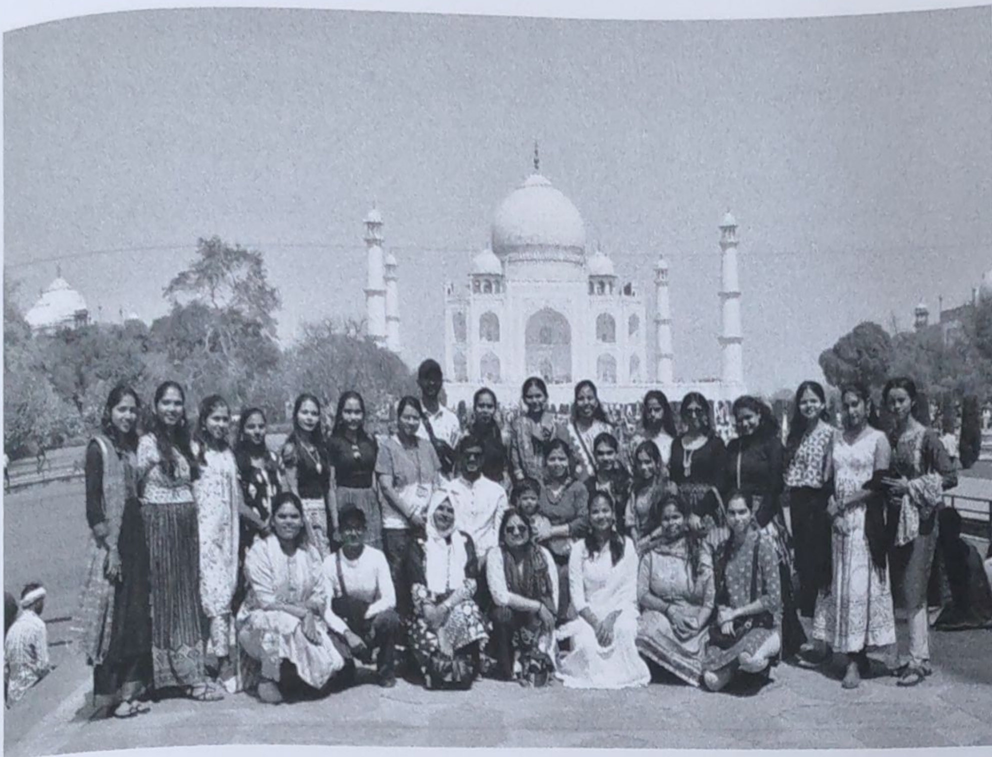

आगरा से मथुरा जाने के लिए हमें १ घंटा लगा होगा लगभग इस दौरान मैं देख रही थी की मेरी मित्र दिव्या इतनी खुश थी की ऐसे लग रहा था की मानो अब उसके आंखों से आंसू निकल आयेंगे। और इस सोच में डूब गई की जैसी मेरे लिए मक्का और मदीना जाना एक सपना है ठीक वैसे ही शायद यह दिव्या का एक सपना था की उसको मथुरा और वृद्धवन जाके कृष्णा के दर्शन करना। और जब में उसको देख रही थी मुझे इतनी खुशी मेहसूस हो रही थी की उसका क्या ही कहना। और इसी के साथ हम मथुरा पहुंच गए। और पहुंचते ही मुझे सर द्वारा अपना हिजाब निकलने के लिए कहा गया जब मैंने यह सुना तो मेरा मन इतना भर आया की मैं उसको अपने शब्दों में बयान नहीं कर सकती पर यह भी तो सच है की उस राज्य में आए दिन हिंदू मुस्लिम के दंगे होते और मैं ठहरी अकेली मुस्लिम लड़की पूरे ग्रुप में। फिर मेरे मन एक यह प्रश्न उठा की क्या अपने धर्म और दूसरों के धर्म में भेद करना भगवान ने सिखाया है ? क्या दूसरे धर्म के

लोगों से नफ़रत करने पर भगवान या अल्लाह खुश होता है ? नहीं ना , तो फिर लोग क्यों आपसे में एक दूसरे से इतनी नफरत करते है। यही सोचते सोचते मैंने मेरे हिजाब को निकाला और मेरे मित्र मुझे इतनी हिम्मत दे रहे थे क्योंकी पूरे ५ साल बाद में बिना हिजाब के सड़कों पर घूम रही थी एक अजीब सी हिचकिचाहट हो रही थी। लेकिन यह भी तो था की मैं मेरे वजह से सबको खतरे में भी तो नहीं डाल सकती थी। और फिर मेरे घनिष्ट मित्र दिव्या और प्रीतेश ने जो मेरा हाथ थामा की मैं भूल गई की मैंने अपना हिजाब निकाल दिया है। और मैंने इतने मज़े से दिव्य के हाथ में हाथ डाल कर उन मथुरा के गलियों मे घूमी हूं उसका क्या ही कहना है। ऐसे लग रहा था की मानो मैं मुस्लिम धर्म की नहीं बल्कि एक हिंदू धर्म की हु और ये एहसाह सिर्फ बढ़ता ही चला गया जब मैं ने पहली बार मथुरा के उस मंदिर कृष्ण जी को देखा मानो ऐसा लगा की मेरी आत्मा तृप्त हो गईं है।

श्री कृष्ण जन्मस्थान मंदिर, जिसे श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर के रूप में भी जाना जाता है, उस जेल की कोठरी पर केंद्रित है जहां भगवान कृष्ण के माता-पिता, माता देवकी और वासुदेव को उनके दुष्ट चाचा कंस ने कैद किया था।

जेल की कोठरी के अलावा, कृष्ण जन्मस्थान मंदिर में भगवान को समर्पित अन्य मंदिर भी हैं। मंदिर का पवित्र वातावरण और पवित्रता मन में विश्वास जगाती है कि यही वह स्थान है जहां भगवान कृष्ण ने स्वयं को प्रकट किया था।

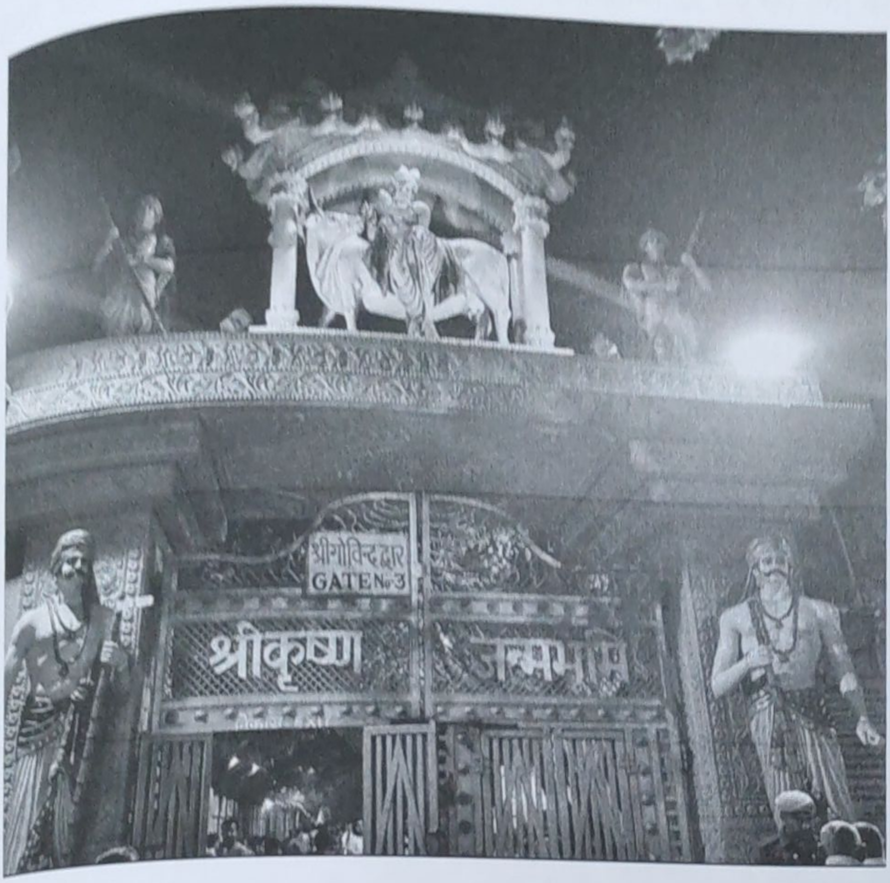

मथुरा के बाद हम जा पहुंचते है वृंदावन। हमें पहले तो लगता है की हम नही जा पाएंगे वहा क्योंकी बहुत ही रात हो चुकी थी लेकीन सबका मन था की वे वहां जाकर होली खेले। वो कहते है ना की अगर किसी चीज़ को तुम शिद्दत से चाहो तो तुम्हें पूरी कायनात मिलने की कोशिश करती है। तो उसी तरह हम वृंदावन जा पहुंचते है और फिर हम कृष्ण मंदिर में जा पहुंचते है और पहली चीज जो पंडित जी कहते है की सबको यहां आने का मौका नहीं यहां वही आ पाता है जिसको श्री कृष्ण बुलाते है। और तब में और दिव्या के मुख पर इतनी बड़ी मुस्कान आई की मैं क्या कहूं। फ़िर हमने प्रवचन सुना और वहां पर होली भी खेली। और मंदिर से लौटते समय किसी ने

हमारे ऊपर फायर एक्सटिंग्युशर से रंग डाला और हम इतना डर गए की क्या बताऊं। वहा से दिल्ली वापस लौटते लौटते सुबह के ३ बज चुके थे। और अब हमारा शरीर भी जवाब दे चुका था। इतने थक गए थे वैसे ही अधि नींद में चल कर हम अपने हॉटल आए और सो गए। यहीं पर हमारे ४ दिन की यात्रा समापत हो जाती है।

यात्रा के पांचवे दिन की शुरुवात कड़कते बदन दर्द के साथ होती है। तबियत इतनी ख़राब होती है की कहीं बाहर जाने का मन ही नहीं करता लेकीन यह हमें यात्रा का आखरी दिन होता है तो हम जैसे तैसे अपने आप को संभाल कर इस दिन की शुरुआत करते है आज हम अग्रसेन की बावली,राजघाट, बाल भवन, ट्रेन म्यूज़ियम, जमिया मस्जिद, लाला किला , चांदनी चौक और सरोजनी नगर जाने वाले थे।

हम अपने पहली मंज़िल के तरफ़ निकल पड़ते है जो है अग्रेसन की बावली , अग्रसेन की बावली, एक संरक्षित पुरातात्विक स्थल हैं जो नई दिल्ली में कनॉट प्लेस के पास स्थित है।[1]इस बावड़ी में सीढ़ीनुमा कुएं में करीब 105 सीढ़ीयां हैं। 14वीं शताब्दी में

महाराजा अग्रसेन ने इसे बनाया था। सन 2012 में भारतीय डाक अग्रसेन की बावड़ी पर डाक टिकट जारी किया गया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और अवशेष अधिनियम 1958 के तहत भारत सरकार द्वारा संरक्षित हैं। इस बावड़ी का निर्माण लाल बलुए पत्थर से हुआ है। अनगढ़ तथा गढ़े हुए पत्थर से निर्मित यह दिल्ली की बेहतरीन बावलियों में से एक है।

क़रीब 60 मीटर लंबी और 15 मीटर ऊंची इस बावली के बारे में विश्वास है कि महाभारत काल में इसका निर्माण कराया गया था। यह दिल्ली की उन गिनी चुनी बावड़ीयों में से एक है, जो अभी भी अच्छी स्थिति में हैं। जंतर मंतर के निकट, हेली रोड पर यह बावड़ी मौजूद है।

अग्रसेन की बावली दिल्ली का एक लोकप्रिय ऐतिहासिक इमारतों में से एक है। बॉलीवुड की लोकप्रिय फिल्म पीके के कुछ सीन यहां फिल्माए गए थे।

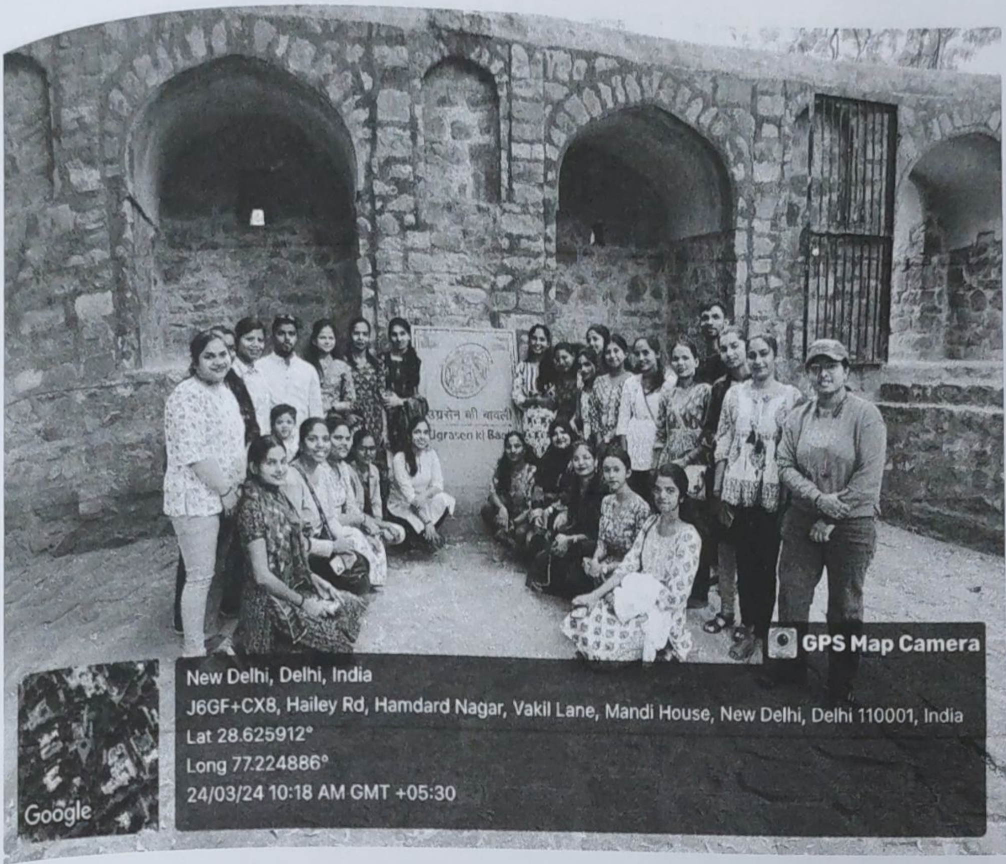

और इसके बाद हम निकल पड़ते है राजघाट की तरफ़,भारत के राष्ट्रपिता माने जाने वाले मोहनदास करमचंद गांधी की स्मृति में निर्मित यह समाधि, राजघाट संगमरमर का एक मंच है, जहां 31 जनवरी, सन् 1948 को महात्मा गांधी का अंतिम संस्कार किया गया था। यमुना नदी के तट पर स्थित, राजघाट साफ-सुथरे उद्यानों से सज्जित है और यहां पेड़ों को बड़े ही सुंदर तरीके से लगाया गया है। इस घाट पर, गांधी जी के नश्वर अवशेषों का अंतिम संस्कार किया गया था। यह समाधि स्वयं गांधी जी का एक सच्चा प्रतिबिंब है और उनकी सादगी का परिचय देती है। यहां ईंटों से बना एक चबूतरा है, जहां उनके मृत शरीर को जलाया गया था और यह काले संगमरमर का

मंच, संगमरमर के किनारों से घिरा है। गांधीजी के मुख से निकले उनके आखिरी शब्द 'हे राम' उस स्मारक पर अंकित है। पास ही में एक शाश्वत ज्योति जलती रहती है। भूदृश्य को सुंदर बनाने वाले विभिन्न तरह के वृक्षों को अनेक गणमान्य लोगों, जैसे रानी एलिजाबेथ द्वितीय, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ड्वाइट आइजनहावर, ऑस्ट्रेलिया के पूर्व अस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री गफ व्हिटमेन आदि द्वारा लगाए गए हैं, और एक पट्टिका पर उन सभी के नाम भी अंकित हैं। इस महान नेता को श्रद्धांजलि देने से पहले आगंतुकों को अपने जूते निकालने पड़ते हैं। शुक्रवार, जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी, उसे याद करने के लिए प्रत्येक शुक्रवार को यहां एक समारोह आयोजित किया जाता है। पास ही में दो संग्रहालय हैं, जो गांधीजी को समर्पित हैं। इस स्मारक को 'वाणु जी भूता' द्वारा डिजाइन किया गया था, और इस राष्ट्रीय स्मारक के वास्तुशिल्प डिजाइन के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा

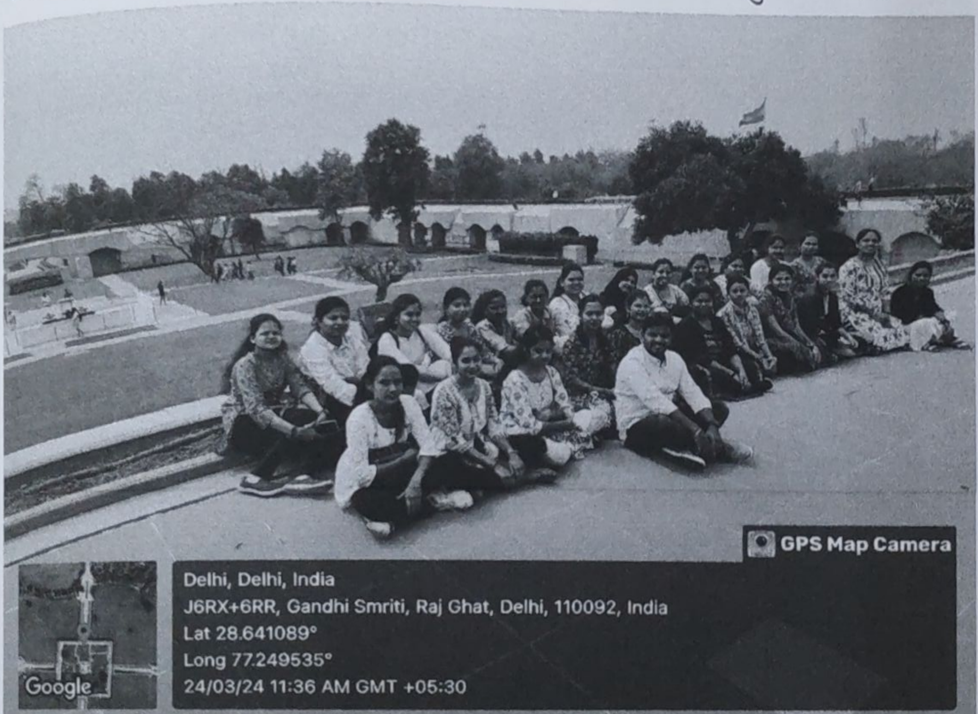

गांधी, जवाहरलाल नेहरू, राजीव गांधी और संजय गांधी जैसे कई अन्य नेताओं के स्मारक भी राज घाट परिसर के अंदर हैं।

इसके बाद हम राष्ट्रिय बाल भवन की तरफ जा पहुंचते है।

राष्ट्रीय बाल भवन एक ऐसा संस्थान है जो बच्चों को उनकी आयु, रूचि एवं योग्यता के अनुसार उनके लिए विविध कार्यकलापों के आयोजन द्वारा विविध अवसर तथा विचार विमर्ष करने, सृजन करने तथा प्रदर्षन के लिए साझा मंच उपलब्ध करवाकर उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को तराषता है। यह बच्चों को किसी भी तनाव या दबाव से

मुक्त, नई चीजें सीखने के लिए असीमित अवसरों सहित निर्बाधउन्मुक्त वातावरण उपलब्ध कराता है।

यह संस्थान नई दिल्ली में आई.टी.ओ., के पास कोटला रोड़ पर सिथत है तथा 5-16 वर्श के बच्चों के लिए यहां कार्यकलाप उपलब्ध हैं। बाल भवन भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय है। यहाँ सोमवार, मंगलवार एवं अन्य राजपत्रित अवकाश रहता हैं। इसकी समयावधि प्रात: 9:00 बजे से सायं 5:30 बजे तक है। वहां पर तरह तरह के पशु – पक्षी भी रखे गए है।

बाल भवन के बाहर हमने एक ठेले पर छोले कुलचे खाए और वहां से रवाना हुवे

अपनी दूसरी मंजिल की ओर और अब हम राष्ट्रीय बाल भवन के बाद ट्रेन म्यूज़ियम चले गए पर वह उस दिन बंद था तो फिर हम जमा मस्जिद देखने के लिए निकल पड़े

और फिर हम जमा मस्जिद नमाज़ के वक्त पहुंच गए और जमा मस्जिद का इतिहास कुछ इस प्रकार से है की यह मस्जिद लाल पत्थरों और संगमरमर का बना हुआ है। लाल किले से महज 500 मी. की दूरी पर जामा मस्जिद स्थित है जो भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है। इस मस्जिद का निर्माण 1650 में शाहजहां ने शुरु करवाया था। इसे बनने में 6 वर्ष का समय और 10 लाख रु.लगे थे। बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से निर्मित इस मस्जिद में उत्तर और दक्षिण द्वारों से प्रवेश किया जा सकता है।

पूर्वी द्वार केवल शुक्रवार को ही खुलता है। इसके बारे में कहा जाता है कि सुल्तान इसी द्वार का प्रयोग करते थे। इसका प्रार्थना गृह बहुत ही सुंदर है। इसमें ग्यारह मेहराब हैं जिसमें बीच वाला महराब अन्य से कुछ बड़ा है। इसके ऊपर बने गुंबदों को सफेद और काले संगमरमर से सजाया गया है जो निजामुद्दीन दरगाह की याद दिलाते हैं।

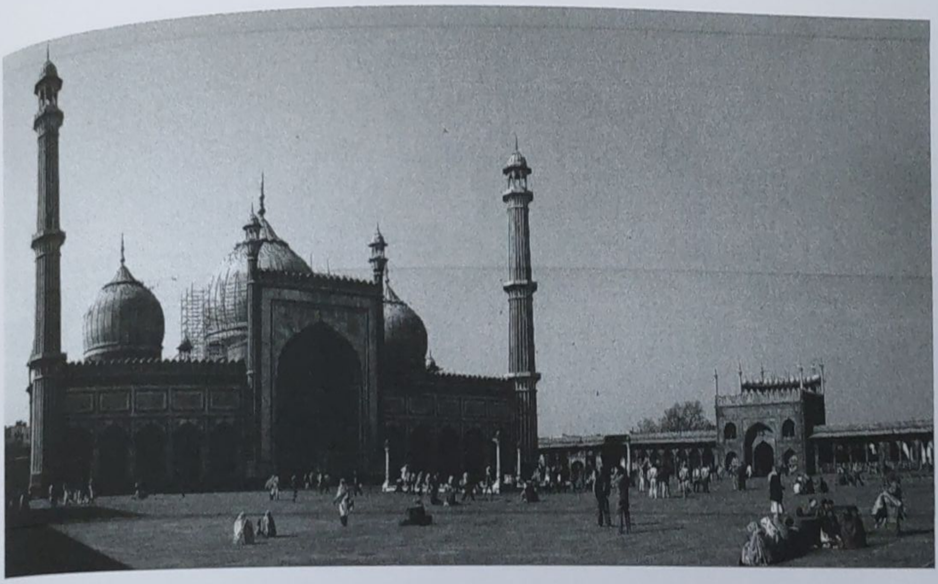

इसको दिखने के बाद हम लाल क़िला देखने के लिए चले गए , और लाल किले का इतिहास कुछ इस प्रकार है की जय हिंदुस्तान लाल किला या लाल क़िला, दिल्ली के ऐतिहासिक123 ,क़िलेबंद, पुरानी दिल्ली के इलाके में स्थित, लाल बलुआ पत्थर से

निर्मित है। किले को "लाल किला", इसकी दीवारों के लाल-लाल रंग के कारण कहा जाता है। इस ऐतिहासिक किले को वर्ष २००७ में युनेस्को द्वारा एक विश्व धरोहर स्थल चयनित किया गया था। भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित लाल किला देश की आन-बान शान और देश की आजादी का प्रतीक है। मुगल काल में बना यह ऐतिहासक स्मारक विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल है और भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। लाल किला के सौंदर्य, भव्यता और आर्कषण को देखने दुनिया के कोने-कोने से लोग आते हैं और इसकी शाही बनावट और अनूठी वास्तुकला की प्रशंसा करते हैं।

कई लोग वहा पर अपने नृत्य के विडियोज भी बना रहे थे।उसी के बगल में चोर बाज़ार था। हमने सिर्फ देखा लेकिन कुछ भी ख़रीदा नही। और फिर वहां से निकल गए।

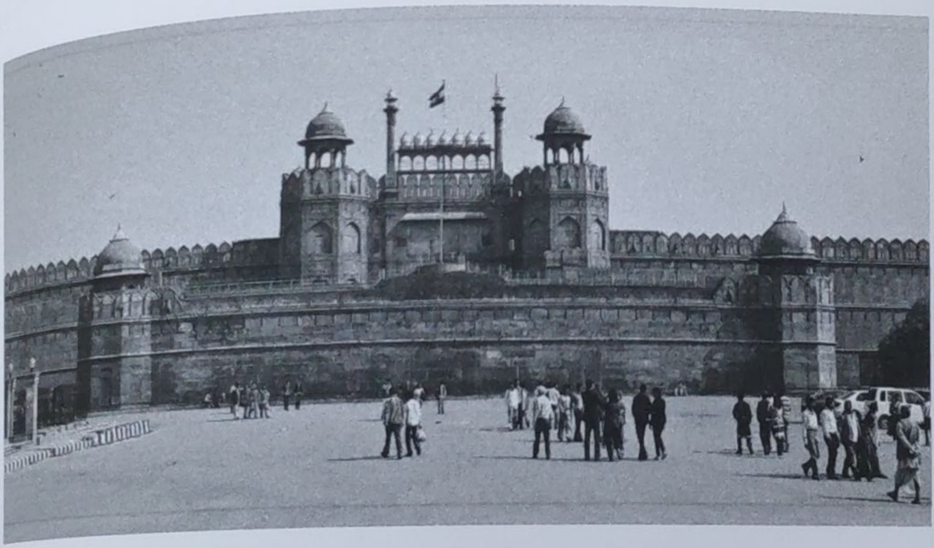

अब वक्त था हमारे यात्रा के अंतिम स्थान पर जाने का और वह था सरोजनी नगर दिल्ली आओ और सरोजनी नगर न जाओ ऐसे हो ही नही सकता। यहां पर हम सब अलग अलग हो गए मैं और दिव्य एक तरफ़ हो गए और हम दोनों ने मिलके इतनी

शॉपिंग की घरवालों के लिए खुद के लिए। और ऐसे कब 4 घंटे सरोजनी नगर में निकल गए उसका अंदाज़ा ही नहीं लगा।और फिर थक कर हम अपने हॉटल आए। और अपने बैक को पैक कर अपने घर वापस जाने की तैयारी की। हमें सुबह 2बजे निज़ामुद्दीन स्टेशन पहुंचना था। तो हम जल्दी से सो गए।और ऐसे ही कुछ हसीन यादों को अपने साथ लिए हम स्टेशन की लिए निकल गए। और फिर हम निजामुद्दीन एक्सप्रेस ट्रेन में बैठ गए सुबह 5 बजे। और फिर हमने अपने ट्रेन में होली खेली और ऐसे ही हमरी एक सुंदर यात्रा की समापन हो गई।